''संस्कार जागृति मिशन'' को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–11 वर्ष–01, मार्च 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

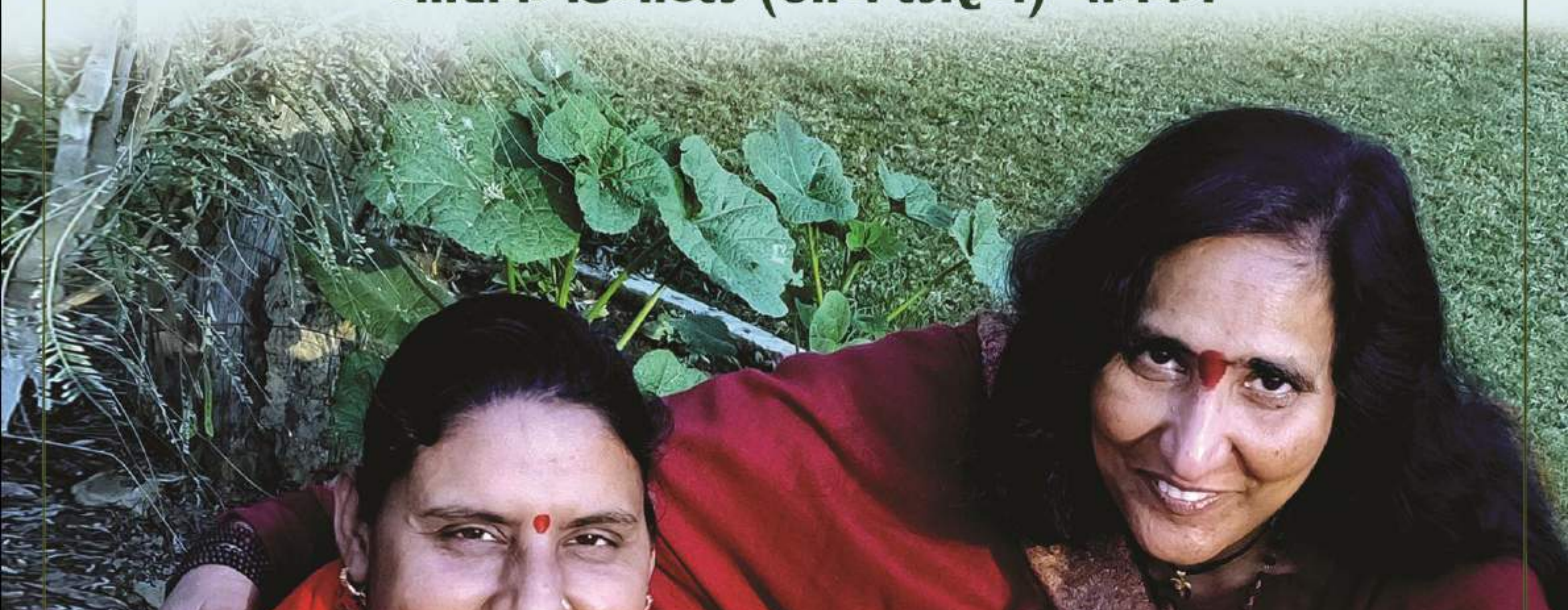

नोवेल कोरोना वायरस

बचाव ही उचित उपचार है

स्वयं की एवं दूसरों की रक्षा करें।

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-11 वर्ष-01, संवत्सर 2077 मार्च 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853121

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता	पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	03
सम्पादकीय	04
संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया	05
कवि की कलम से	06
परमात्मा को सदाचार ही सबसे प्रिय है	07
बुरी संगत बिगाड देती है खेल	08
स्वास्थ्य चर्चा	09
कोराना के लक्षण एवं उपाय	10
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां	11-14
विज्ञापन	15-16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

हे परमेश्वर! मुझे सर्वदा अभय बना दे

वेद मंत्र

ओ३म् इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून् विचर्षणिः।।

-ऋ० २।४१।१२, अथर्व० २०।५७।१०

ऋषिः-**गृत्समदः**।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**निचृद्गायत्री**।।

विनय

मैं डरता क्यों हूं? परमेश्वर (इन्द्र) की इस सृष्टि में रहते हुए तो किसी भी काल में, किसी भी देश में भय का कुछ भी कारण नहीं है। क्या मैं अपने शत्रुओं से डरता हूं? मेरा तो इस इन्द्र की सृष्टि में कोई शत्रु नहीं होना चाहिए। मेरा कोई शत्रु है ही नहीं। हां, एक अर्थ में पाप करनेवाले मनुष्यों को शत्रु कहा जा सकता है, क्योंकि पाप करना परमात्मा से शत्रुता करना है-पाप करना ईश्वरीय शासन के प्रति विद्रोह करना है, परन्तु ऐसे पाप करनेवाले भाई से भी मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? यह ठीक है कि ऐसे पाप करनेवाले भाई तब मुझे अपना शत्रु समझ लेंगे जब कभी उनके पाप का विरोध करना मेरा कर्तव्य हो जायेगा और तब वे मुझे अपना शत्रु मानकर नाना प्रकार से सताने-कष्ट देने-को भी उद्यत होंगे, परन्तु उस पापी भाई के सताने से भी मेरा क्या बिगड़ेगा? वह तो बेचारा स्वयं परमात्मादेव का मारा हुआ है। परमात्मा तो स्वभावतः **'शत्रून् जेता'** है। उससे शत्रुता करके, अर्थात् पाप करके कौन बचा रह सकता है? यदि यह विश्वास पक्का हो जाए कि परमात्मा 'शत्रून जेता' है तो अज्ञानी, पापी पुरूषों की ओर से आये हुए बड़े-से-बड़े सन्तापों का, घोर-से-घोर अत्याचारों का भी भय हट जाए। ऐसा विचार थोड़ी देर के लिए आने पर ही एकदम निर्भयता आ जाती है और फिर उसे समुचित 'विचर्षणि' परमेश्वर सब प्राणियों के सब कर्मों को ठीक-ठीक देखता हुआ पाप और पुण्य का फल दे रहा है। वह ठीक ढंग से ठीक समय प्रत्येक पाप का विनाश कर रहा है-पाप को परास्त कर रहा है। तब मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? मुझे तो कोई दुःख-क्लेश तभी मिलेगा जब मेरा ही कोई पापकर्म उदय होगा, नहीं तो किसी अन्य मनुष्य की चाहना से मुझे क्लेश कभी नहीं हो सकता और यदि मेरे अपने ही पाप-कर्मों के कारण कोई क्लेश आता है तो वह तो आना ही चाहिए। उसे मैं प्रसन्नता से सह-सहकर निष्पाप और अनृण होता जाउंगा। वह क्लेश उस 'शत्रु' का भेजा हुआ नहीं है, किन्तु मेरे प्यारे परमेश्वर का भेजा है, उसका तो मुझे स्वागत करना चाहिए। एवं, इस संसार में-चारों दिशाओं में, मेरा अब कोई दुःख दे सकनेवाला शत्रु नहीं रहा है। जब से प्रभु को 'विचर्षण' और 'शत्रून् जेता' जान लिया है, तब से मैं अभय हो गया हूं-सब ओर से अभय हो गया हूं-किसी दिशा से कोई भय नहीं है। अभय, अभय!

शब्दार्थ

इन्द्रः- इन्द्र परमेश्वर। मुझे **सर्वाभ्यः आशाभ्यः परि**- सब दिशाओं से **अभयं करत्**- अभय कर दे। शत्रून् जेता- जो परमेश्वर शत्रुओं को जीतनेवाला है, विचर्षणिः- और सब-कुछ (प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कर्म को) पूरी तरह देखनेवाला है।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

सम्पादकीय

कोरोना वायरस व अग्निहोत्र

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

भारत ही नहीं अपितु पूरा विश्व इस समय कोरोना रोग से त्रस्त है। यह रोग संक्रमित व्यक्ति को छूने/स्पर्श/संग करने से होता है। इससे बचने के लिए अलग रहना या सोशल डिस्टेंस अत्यावश्यक व अपरिहार्य है। देश की सरकार इस रोग पर नियंत्रण के लिए कृतसंकल्प है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्र के प्रति दो बार सम्बोधन दिया है और भारतीय जनता से अपील की है कि कोई भी भारतीय व्यक्ति अपने घरों से बाहर न निकलें। उन्होंने लक्ष्मण रेखा कहकर लोगों को माता सीता की याद दिलाई। जैसे माता सीता ने रेखा का उल्लंघन किया तो अपार कष्टों में जाना पड़ा। हम माननीय मोदी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं कि वो बहुत ही संवेदनशील होकर अपनी प्रजा की रक्षा हेतु प्रयत्नशील हैं।

रोगों में संक्रमण रोग बहुत भयानक होते हैं। जैसे तपेदिक, हैजा, प्लेग, चेचक, मोतीझरा इत्यादि सब संक्रामण अर्थात् छुआछूत के रोग हैं। इन सबसे अधिक संक्रामक रोग जो आज सारे विश्व में तेजी से फैल रहा है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति भयभीत है वह 'कोरोना' है। जब कोई रोग किसी रोगी के सम्पर्क से दूसरे स्वस्थ्य मनुष्य को लग जाये, उसे हम छूत की बीमारी कहते हैं। कृमि द्वारा रोग का होना भारतवर्ष के विद्वान बहुत समय से जानते थे। चेचक इत्यादि के रोगी के पास प्रत्येक व्यक्ति को न जाने देना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अब भी मिलता है। ये कृमि प्रत्येक स्थान पर मिलते हैं। पृथ्वी का कोई स्थान इनसे रिक्त नहीं है। विचारणीय यह है कि भारत जैसे धर्मपरायण देश में क्या यह सम्भव है कि पुत्र रोग शैया पर पड़ा हो और माता-पिता उसके समीप न जायें, पति रोगी हो और पत्नी पृथक बैठी रहे, उसकी कोई वस्तु न छुए? रोगी का कार्य करने को हर समय नर्सें बुलाई जायें या अपने घर के किसी व्यक्ति के रोगी होते ही उसे चिकित्सालय में डालकर सब घर चले आयें?

ऋषि-मुनियों के देश का वासी होने के नाते अपने प्राचीन भारत की चिकित्सा पद्धति से अवगत कराना चाहता हूं कि माननीय मोदी जी अपने सम्बोधन के साथ-साथ कोरोना के अनेक उपायों में यज्ञ सिद्धांत को भी प्रत्येक घर में लागू करायें। मैं वेदों के आधार पर बहुत आत्मविश्वास के साथ देशवासियों से कहना चाहता हूं कि प्रत्येक भारतीय प्रधानमंत्री जी के आदेशानुसार 21 दिन घरों में रहेंगे ही, परन्तु इसके साथ-साथ प्रातः और सायं यज्ञ अवश्य करें। कोरोना का सबसे उत्तम उपाय यह है कि प्रत्येक घर में नित्यप्रति हवन किया जाये, जिससे वायु शुद्ध और हल्की होकर स्वयं कृमियों का नाश कर दे। उस वायु के घर में फैलने से जहां खान-पान की वस्तुएं कृमि रहित होगी, शीघ्र सड़ने से बचेंगी, वहां स्वस्थ्य पुरूष रोग की छूत से सुरक्षित रह सकेंगे। वे ही परमाणु वायु में सम्मिलित होकर श्वास द्वारा जब रोगी के शरीर में प्रवेश करेंगे तब वहां से कृमियों का नाश करेंगे। हवन से बढ़कर और कोई उपाय इस कोरोना (छूत) से बचने का नहीं हो सकता। इसलिए वैदिक धर्म में प्रातः व सायं हवन करना धार्मिक कृत्य बतलाया है। ताकि प्रत्येक मकान की वायु शुद्धि होकर रोगों का नाश कर दे। इतिहास इसकी पुष्टि करता है, जिस समय हवन की यह प्रथा थी रोगों की ऐसी भरमार न थी।

संस्कार जागृति मिशन भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ महाराज जी से मांग करता है कि 21 दिन के लॉक डाउन के समय यज्ञ पद्धति को भी प्रत्येक घर में लागू कराने के लिए भारतवासियों को प्रेरित करें, जिससे कोरोना रोग का बढ़ता हुआ वेग रूक सकता है।

देशवासियों से भी हमारा अनुरोध है कि वह सरकार के निर्देशों का पालन करें व दूसरों को करने की प्रेरणा दें। यह अभूतपूर्व राष्ट्रीय संकट है, इस पर अभूतपूर्व प्रयत्नों से ही नियंत्रण किया जा सकता है। ईश्वर हमारे देश से ही नहीं बल्कि पूरे विश्व से यह संकट दूर करे।

गतांक से आगे...

''संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

भारतीय मनोविज्ञान की कुछ मूलभूत अवधारणाएं यदि हमारी समझ में आ जाएं तो मानव के अनेकानेक पक्ष आज की सारी समस्याओं के कारण, निदान व समाधान तथा भारतीय संस्कृति के विभिन्न उपादानों का उनमें योगदान हमारी समझ में आ जायेगा। भारतीय मनोविज्ञान अन्त:करण चतुष्टय की सत्ता को मानता है व उसके चार भाग बताता है – मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार। मन व बुद्धि चेतन के अंग हैं तथा चित्त व अहंकार अचेतन की सृष्टि माने जाते हैं। मनुष्य की विराट जीवन यात्रा का खेल जिन संस्कारों के आधार पर चलता है जो उसका व्यक्तित्व बनाते हैं, उसके भाग्यविधाता हैं, वे इसी अन्त:करण चतुष्टय के अचेतन भाग में विराजमान रहते हैं। ऋषियों की मान्यता है कि कर्म संस्कार जन्म-जन्मान्तरों की चौरासी लाख योनियों की एक लम्बी यात्रा में परिभ्रमण करते हैं। इन्हीं को साथ लेकर मनुष्य जन्म लेता है व उनका अनगढ व सुगढ होना, उसके भावी कर्मों की गति का निर्धारण, सब कुछ प्रारब्ध व पुरुषार्थ के समीकरण पर टिका होता है। संस्कारों के चित्त पर एक बहुत बडी गुत्थी सुलझ जाती है कि समान वातावरण व परिस्थितियों के होते हुए भी अपनी कुसंस्कारित से जूझकर उभर कर आने में क्यों किसी को अधिक संघर्ष करना पडता है? क्यों किसी के लिए यह मार्ग निष्कटंक होता चला जाता है। बिना अधिक कुछ कर्म सम्पादन किए संस्कृति का यह गुह्य पक्ष बडा ही अद्भुत व रहस्यों से भरा है।

श्री अरविन्द जी ने मनुष्य को दो तिहाई पशु प्रवृत्तियों को लेकर आया जीवधारी माना है व 'मानवचक्र' पुस्तक में उसकी विस्तृत व्याख्या करते हुए लिखा है कि यह उसका सौभाग्य है कि वह कर्म योनि में आया है ताकि कर्म करके वह अपनी विगत पशु प्रवृत्तियों को मिटा सके व नये संस्कारों का संग्रह कर अपने लिए या तो श्रेष्ठ स्थिति चुन ले अथवा जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाए। वस्तुत: हर मानव बेहोशी में जीता है। हम सब अचेतन में ही जीते हैं। जन्म के समय छोटे बच्चे के रुप में हमारे 'नेचुरल इंस्टीक्स' जीवित रहते हैं तब स्वचालित प्रक्रियाऐं उसी क्रम से चलती है। क्रमिक गति से धीरे-धीरे मन का विकास होने लगता है व अचेतन में विद्यमान संस्कार हावी होकर वैसे कर्म कराने लगते हैं। हमारी नब्बे प्रतिशत गतिविधियां यहीं से संचालित होती है। पूर्वात्य मनोविज्ञान का सारा जोर इसी पर है कि व्यक्ति के अचेतन का परिष्कार कर दिया जाए ताकि वह नरपशु से नरमानव व देवमानव बन सके। सारी साधना पद्धतियां षोढश संस्कार विधान व तीर्थ, आरण्यक आदि उपादन इसी अचेतन की परिष्कृति के निमित्त ही है। व्यक्तित्व की परिष्कृति ही प्रकारान्तर से संस्कृति है व इस प्रकार भारतीय संस्कृति अपने शब्दार्थ के अनुरुप ही मानव मन पर अपना सारा प्रभाव दिखाती व उसी क्षेत्र में परिवर्तन कर सही मानव सही समाज व सही युग की रचना करने की बात कहती है। ऋषियों की यह मान्यता है कि इस जन्म में जीव प्रधान रुप में जो कार्य करता है उसके सारे संस्कार उसके चित्त में अंकित हो जाते हैं। इन संस्कारों के चित्त पर अंकित होने की प्रक्रिया की तुलना ग्रामोफोन, रिकॉर्ड, फोटोग्राफ की नेगेटिव प्लेट या ऑडियो कैसेट की टेप पर किये गए अंकन से की जा सकती है। इन्हीं अंकित संस्कारों को धारणा कर जीव अग्रिम जन्म में उन्हीं के अनुरुप शरीर जन्म लेकर आता है और उन संस्कारों के अनुरुप ही उसकी आसक्ति या कर्मों में सहज प्रवृत्ति होती है। कर्म मीमांसा दर्शनकार लिखता है – '**कर्मबीजं संस्कार:**' अर्थात् संस्कार ही कर्म का बीज है तथा '**तन्निमित्ता सृष्टि:**' वही सृष्टि का आदि कारण है। इस प्रकार जीव सर्वथा संस्कारों का दास है, ऐसी मान्यता वैदिक ऋषि की है।...(शेष अगले अंक में)

कवि की कलम से

कोराना गीत : कवि राम औतार आर्य (एटा)

कोरोना से हाहाकार, सारी दुनिया में।
सब लोग हुए लाचार सारी दुनिया में।।

यह कोरोना अति दुखदाई।
जिसकी जग में नहीं दवाई।।
गए वैद्य चिकित्सक हार, सारी दुनिया में।
कोरोना से हाहाकार...।।1।।

'कोरोना' छूने से होता।
बीज संक्रमण के ये बोता।।
हो सर्दी व खाँसी बुखार,सारी दुनियाँ में।
कोरोना से हाहाकार......।।2।।

होटल हॉल मॉल न्यायालय।
बन्द हुए सारे विद्यालय।।
सब बन्द हुआ व्यापार, सारी दुनिया में।
कोरोना से हाहाकार...।।3।।

दोउ हाथ साबुन से धोना।
कोसों दूर रहे ये कोरोना।।
हर कोई करे नमस्कार सारी दुनिया में।
कोरोना से हाहाकार....।।4।।

तुलसी नीम गिलोय है पीना।
प्राणायाम करो यदि जीना।।
अपना लो शाकाहार, सारी दुनिया में।
कोरोना से हाहाकार....।।5।।

सुन लो प्यारे भाई बहना।
भीड़भाड़ से बचके रहना।।
कहे 'योगी रामऔतार', सारी दुनिया में।
कोरोना से हाहाकार...।।6।।

वि.संवत 2077

नये वर्ष की सबको है शुभकामना

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही, सृष्टि का आरंभ हुआ,
वेद मिले मानव को इस दिन, ज्ञान यहाँ प्रारम्भ हुआ।
श्रीराम के राजतिलक का, यही दिवस कहलाता है,
नवरात्रि आरम्भ हैं होतीं, नया अन्न घर आता है।।

ऋषिवर दयानन्द ने इस दिन, आर्य समाज बनाया था,
झूलेलाल ने आज के दिन ही, जन्म यहाँ पर पाया था।
इस दिन ही विक्रमादित्य ने, राज्य किया स्थापित था,
आज के दिन से धर्मराज ने, राज्य किया जी शासित था।।

रचियता : रोहित आर्य (अलीगढ़)

है भारत की परम्परा यह, परिपाटी है सालों की,
हम सबका गौरव है ये ही, श्रद्धा भारत वालों की।
आओ सारे मिलकर के, अपना नव वर्ष मनायें हम,
भारत की इस परम्परा को, आगे और बढ़ाएं हम।।

स्वस्थ रहें, समृद्ध रहें, हो देशभक्ति की भावना,
नये वर्ष की मेरी ओर से, सबको है शुभकामना।।

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

कार्यालय : 52, ताराधाम कॉलोनी, पुष्पांजलि द्वारिका के पास, पोस्ट-अडूकी, मथुरा (उ.प्र.) -281006

गतांक से आगे...

''परमात्मा को सदाचार ही सबसे प्रिय है''

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

सामवेद का सूक्त कहता है-

'देवेभिर्मानुषेजने'

अर्थात् परमात्मा का, देवता का वास वहां है जिनके पास मानवता है, आचरण है, नैतिकता है, चरित्र है। इसी की पुष्टि गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान श्रीराम के मुंह से उस समय कराई है, जिस समय भगवान श्रीराम और लक्ष्मण एक वाटिका में घूम रहे हैं संयोगवश वहां सीताजी भी पहुंच जाती हैं तो भगवान राम सीता को देखकर लक्ष्मण से कहते हैं-

रघुवंशिन कर सहज सुभाऊ, मन कुपन्थ पग धरिये न काऊ।
मोहि अतिशय प्रतीति जिय केरी, जिन सपनेहुं पर नारि न होरी।।

एक राजा ने एक वृद्ध व्यक्ति से पूछा कि बताओ तेरा राज्य अच्छा है या मेरे पिता जी का राज्य अच्छा था या मेरे दादाजी का राज्य अच्छा था, आपने तीनों का ही राज्य देखा है? राजा की इस बात को सुनकर उस वृद्ध ने कहा कि राजन् मैं तो यह बता सकता हूं कि एक बार जब मैं नौजवान था तो एक नव युवती जेवर पहनकर रास्ता भूली हुई तुम्हारे दादाजी के राज में शाम को मेरे पास आई। मैने उसे भोजन कराया, रात को ठीक प्रकार अलग कमरे में सुलाया और प्रातःकाल सम्मानपूर्वक एक चवन्नी देकर विदा कर दिया। दादा के बाद तुम्हारे पिता जी का राज आया तो मेरे विचारों में परिवर्तन आया और विचार किया कि तू कम से कम उसके जवेर तो उतार ही लेता, तुझे कोई देखने वाला तो था ही नहीं, कितना अच्छा होता। अब राजन तुम्हारे राज में 75 वर्ष की आयु के बाद मुझे यह सोच आ रही है कि मैने कितना सुनहरा अवसर ही खो दिया- मैं नौजवान था और लड़की भी जवान थी। यदि उसको अपनी पत्नी बना लेता तो कितना अच्छा होता। उसके पास जेवर भी था, वह मजबूर भी थी, जो कहता वही स्वीकार करना पड़ता। स्वभाव में, विचारों में इतना अन्तर आ गया है। अब तुम्ही अनुमान लगाओ कि तीनों में से राज्य किसका बढ़िया था।

एक राजा के पास एक बिल्ला था। राजा उसे शेर कहकर पुकारता था। एक दिन एक भंगी ने राजा से कहा कि महाराज शेर से तो श्रेष्ठ बादल हैं उनकी पहुंच आसमान तक है। तो राजा ने बिल्ले का नाम बादल रख लिया। दूसरे दिन राजा के दूसरे मंत्री ने कहा कि राजन् बादल से श्रेष्ठ या बलवान तो वायु है क्योंकि वायु जिधर चाहे उधर बादलों को ले जाती है, तभी तीसरा दरबारी बोल उठा महाराज वायु से मजबूज तो दीवार होती है क्योंकि वायु दीवार को टस से मस नहीं कर पाती। तभी चौथे ने कहा कि महाराज दीवार से मजबूत तो चूहा होता है क्योंकि वह दीवार में भी छेद कर डालता है। तभी वहां एक छोटा सा बालक खिलखिलाकर हंस पड़ा। राजा ने पूछा बेटे तुम हंसे क्यों? उस बच्चे ने कहा महाराज आप इसका नाम बिल्ला ही रखें क्योंकि चूहे से तो बिल्ला ही बलवान होता है। कहते हैं राजा बड़ा खुश हुआ और राजा राजी हो गया कि हां बिल्ला ही ठीक है। यह कथानक हमें यह बताता है कि हम जो हैं, जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करें। क्योंकि परायापन कितना ही सुन्दर व प्रिय क्यों न लगे पर वह ठीक नहीं होता। हम पराया व्यक्तित्व ओढ़ने वाले न बनें। हम सदा यथार्थवादी, आदर्शवादी बने। हमारा पूरा का पूरा आचरण सत्य से भरपूर हो, सदाचार से युक्त हो। परमात्मा को सदाचार ही सबसे प्रिय है क्योंकि सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है- ''नहि सत्यात् परो धर्मः''।

''धर्म न दूजा सत्य समाना।''

प्रेरक प्रसंग

बुरी संगत बिगाड देती है खेल

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक बार एक शिकारी शिकार करने गया, शिकार नहीं मिला, थकान हुई, तो एक वृक्ष के नीचे आकर सो गया। हवा तेज थी, इसलिए वृक्ष की छाया कभी कम-ज्यादा हो रही थी। इस दौरान वहां से सुन्दर हंस उड़कर जा रहा था। हंस ने देखा कि वह व्यक्ति परेशान हो रहा हैं, धूप उसके मुंह पर आ रही हैं तो ठीक से सो नहीं पा रहा हैं। हंस पेड़ की डाली पर अपने पंख खोल कर बैठ गया ताकि उनकी छांव में वह शिकारी आराम से सो सके।

शिकारी आराम से सो रहा था तभी एक कौआ आकर उसी डाली पर बैठा, जिस पर हंस बैठा था। कौवे ने इधर-उधर देखा और बिना कुछ सोचे-समझे शिकारी के ऊपर मल विसर्जन कर वहां से उड़ गया। शिकारी उठ गया और गुस्से से यहां-वहां देखने लगा और उसकी नजर हंस पर पड़ी और उसने तुरंत धनुष बाण निकाला और हंस को मार दिया। हंस नीचे गिरा और मरते-मरते हंस ने कहा, मैं तो आपकी सेवा कर रहा था, मैं तो आपको छांव दे रहा था, आपने मुझे ही मार दिया? इसमें मेरा क्या दोष? उस समय शिकारी ने कहा, यद्यपि आपका जन्म उच्च परिवार में हुआ, आपकी सोच आपके तन की तरह ही सुंदर है, आपके संस्कार शुद्ध हैं, यहां तक कि आप अच्छे इरादे से मेरे लिए पेड़ की डाली पर बैठ मेरी सेवा कर रहे थे, लेकिन आपसे एक गलती हो गई कि जब आपके पास कौआ आकर बैठा तो आपको उसी समय उड़ जाना चाहिए था। उस दुष्ट कौए के साथ एक घड़ी की संगत ने ही आपको मृत्यु के द्वार पर पहुंचाया है।

संसार में संगति का सदैव ध्यान रखना चाहिये। जो मन, कार्य और बुद्धि से परमहंस हैं, उन्हें कौओं की सभा से दूरी बनायें रखना चाहिये।

यह भी जानें :- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को 1960853121 वर्ष पूर्व इस पृथिवी के तिब्बत - हिमालय क्षेत्र में युवावस्था में मनुष्यों की उत्पत्ति हुई। मनुष्योत्पत्ति के दिन ही अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार महर्षियों ने ब्रह्माण्ड में अनेक प्रकार के वाइब्रेशन के रूप में व्याप्त वैदिक ऋचाओं (मंत्रों) को अपने योग बल से ग्रहण करके सृष्टि के रचयिता निराकार सर्वज्ञ ब्रह्म रूप चेतन तत्व की प्रेरणा से उनका अर्थ भी जाना, जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में सृष्टि में विख्यात हुआ। इन्हीं चार ऋषियों ने महर्षि ब्रह्मा (आद्य) को सर्वप्रथम चारों वेदों का ज्ञान दिया। यह संवत् संसार के सभी धार्मिक पवित्र मानवों के लिए है।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका
श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)
की अमृतमयी वाणी में
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

कोरोना वायरस : आज ही उठायें ये दस कदम

नीति प्रिय आर्य

कोरोना वायरस की वजह से पूरे देश में ही नहीं बल्कि विश्व में हाहाकार मचा हुआ है। बताया जाता है कि कोरोना वायरस जानवरों से इंसानों में आया है। शुरू में चीन के वुहान में सीफूड होलसेल मार्केट से लोगों में संक्रमण हुआ। कोरोना वायरस से बचने के लिए अब तक कोई कारगर दवा का निर्माण नहीं हो सका है। कोरोना से लोग डरे हुए हैं। इससे बचने के लिए आज ही उठायें ये दस कदम, संक्रमण होगा कम-

1. **नियमित तौर पर हाथ धोएं :-** दिन में कई बार साबुन से हाथ को कम से कम 20 सेकेण्ड तक धोएं। वैक्टीरिया मारने वाला अच्छा सेनेटाइजर का भी उपयोग कर सकते हैं। ऐसा करने से हाथों पर रहने वाले वायरस से छुटकारा मिल जायेगा।

2. **उचित दूरी बनाकर रखें :-** लोगों के साथ कम से कम 3 फीट का फासला बनाये रखने की कोशिश करें। खासतौर से उस व्यक्ति से जिसे खांसी या जुकाम हो। जब कोईव्यक्ति खांसता या छींकता है, तो हवा में वासरस फैल जाते हैं। अगर आप ज्यादा करीब रहेंगे तो सांस के रास्ते ये वायरस आपके शरीर में जा सकता है।

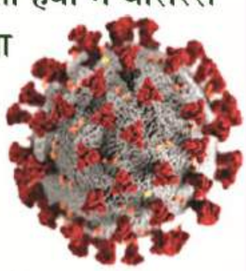

3. **नाक, मुंह और आंखों को न छुएं :-** अक्सर हम अपनी नाक, मुंह और आंख को बार-बार छूते रहते हैं। ऐसा न करें। हथेलियां कई सतहों को छूती हैं। ऐसे में उस पर वासरस होते हैं। दूशित हथेली से वायरस नाक, मुंह या आंखों के जरिए शरीर में जा सकता है।

4. **खांसते वक्त टिशू का इस्तेमाल करें :-** अपने आसपास सफाई का खासतौर से ख्याल रखें। ध्यान रहे कि छींकते या खांसते वक्त नाक और मुंह को टिशू से ढक लें और तुरंत बाद इस टिशू को डस्टबिन में फेंक दें। छींकने से निकलने वाले तरल पदार्थ में ढेरों वायरस होते हैं। और ये तेजी से फैल सकते है।

5. **खांसी, जुकाम को हल्के में न लें :-** अगर आपको बुखार, खांसी है या सांस लेने में परेशानी हो रही है तो तुरंत डॉक्टर से मिलें। कोशिश करें कि घर पर ही रहें। डॉक्टर से तुरंत सम्पर्क करने से बीमारी को शुरूआत में ही पकड़ा जा सकता है।

6. **मोबाइल की स्क्रीन को साफ रखें :-** आपने स्मार्टफोन को सप्ताह में एक बार डिसइंफेटिंग वाइप्स से साफ जरूर करें। ये वाइप्स फोन में ऊपरी भाग में रहने वाले सभी कीटाणुओं को खत्म कर देते हैं। हमारे हाथ में 24 घण्टे रहने वाले स्मार्टफोन की स्क्रीन वायरस का बड़ा अठ्डा है। स्क्रीन पर मेथिलिन रसिस्टेंट स्टेफायलोकोक्स औरीयास (एमआरएसए) नाम के जीवाणु होते हैं।

7. **बाथरूम को करें साफ :-** बाथरूम की सफाई के वक्त शावर को जरूर साफ करें। इसे डिटॉल के पानी से धो सकते हैं। प्लास्टिक के पर्दों का प्रयोग बाथरूम में न करें। शॉवर में मैथालॉबेक्टर समेत कई कीटाणु पनपते हैं। कई शोध में पता चलता है कि से वायरस शॉवर और बाथरूम के परदों में ज्यादा पनपते हैं।

8. **यात्रा में रखें ध्यान :-** खाने का सामान लेने से पहले अपने हाथ को अच्छे से साफ कर लें। हवाई यात्रा में क्रू सदस्यों से कोरोना वायरस के फैलने का डर सबसे ज्यादा है।

9. **अस्पताल जाना पड़े तो :-** अगर आपको अस्पताल में रूकना पड़ रहा है। तो कोशिश करें कि अपने खाने में दही का इस्तेमाल करें। दही में एसीडोफिलस नाम का बैक्टीरिया होता है। जो कई तरह के वासरस को खत्म कर देता है।

10. **मास्क जरूर पहनें :-** अगर आपको खांसी या जुकाम है, तो मास्क जरूर पहनें। खासतौर से बाहर निकलते वक्त। आपके जरिये वायरस दूसरों में संक्रमित हो सकता है। इसलिए खास ख्याल रखें।

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

डा० अर्चना प्रिय आर्य

(अध्यक्ष)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

कोरेना वायरस (COVID-19)

के लक्षण एवं बचाव के उपाय

कोरोना वायरस एक तरह का संक्रमित वायरस है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संक्रमण के जरिए फैलता है। इस वायरस के लक्षण निमोनिया की तरह है।

कोरोना वायरस के लक्षण

सिर दर्द

साँस लेने में तकलीफ

छींक

खांसी

बुखार

किडनी फेल

कोरोना वायरस कैसे फैलता है?

मानव कोरोना वायरस (COVID-2019) आमतौर पर एक संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है :

- खुली हवा में खांसने तथा छींकने से।
- नजदीकी व्यक्तिगत सम्पर्क जैसे कि छूना या हाथ मिलाना ।
- किसी संक्रमित वस्तु या सतह को छूना फिर बिना हाथ धोए अपने नाक, मुंह या आँखों को छूना।

कोरोना वायरस के बचाव

- अपने हाथ साबुन और पानी या सेनिटाईजर से साफ करें।
- खांसते और छींकते वक्त अपनी नाक और मुंह को टिश्यू या मुड़ी हुई कोहनी से ढकें।
- जिन्हें सर्दी या फ्लू जैसे लक्षण हो तो उनके साथ करीबी सम्पर्क बनाने से

क्या करें

- खाँसने और छींकने के दौरान अपनी नाक व मुंह को कपड़े अथवा रूमाल से जरूर ढकें।
- अपने हाथों को साबुन व पानी से धोयें।
- भीड़–भाड़ वाने क्षेत्रों में जाने से बचें।
- फ्लू से संक्रमित हों तो घर पर ही आराम करें।
- फ्लू से संक्रमित व्यक्ति से एक हाथ तक की दूरी बनाए रखें।
- पर्याप्त नींद और आराम लें।
- पर्याप्त मात्रा में पानी/तरल पदार्थ पियें और पौषक आहार खाएं।
- फ्लू से संक्रमण का संदेह हो तो चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।

क्या न करें

- गंदे हाथों से आँख, नाक अथवा मुंह को छूना।
- किसी को मिलने के दौरान गले लगाना, चूमना या हाथ मिलाना।
- सार्वजनिक स्थानों पर थूकना।
- बिना चिकित्सक के परामर्श के दवाएं लेना।
- इस्तेमाल किए हुए नेपकिन, टिशू पेपर इत्यादि खुले में फेंकना।
- फ्लू वायरस से दूषित सतहों का स्पर्श (रेलिंग, दरवाजे इत्यादि)

लक्षण पाये जाने पर लापरवाही न बरतें

उपचार के लिए तत्काल नजदीकी राजकीय चिकित्सालय में सम्पर्क करें या

नेशन कॉल सेन्टर नं. +91 -11-23978046

टोल फ्री हेल्पलाईन नं. 104/108

हम सभी के एक साथ प्रयास और जागरूकता से इस कोरोना वायरस को हराया जा सकता है।

इस पिक्चर को ज्यादा से ज्यादा शेयर करें।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

स्वतंत्रता सेनानी स्व.रोशनलाल गौतम जी की शोक सभा में परिजनों द्वारा संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। दूसरे चित्र में मौजूद अलीगढ़ सांसद सतीश गौतम, मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य व अन्य।

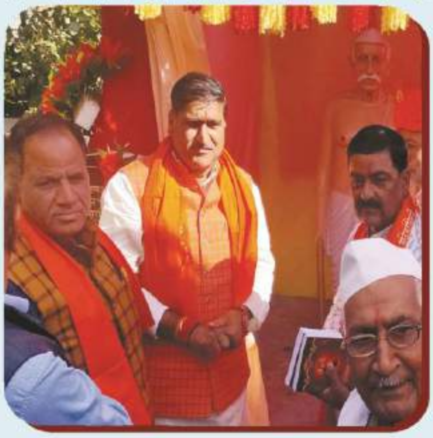

सादाबाद में स्वतत्रंता सेनानी रोशनलाल गौतम की शोक सभा के दौरान आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी को परिजनों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। दूसरे चित्र में स्व.गौतम जी की प्रमिता का अनावरण करते सांसद सतीश गौतम, पूर्व विधायक प्रताप चौधरी, आचार्य सत्यप्रिय आर्य तथा सभा को सम्बोधित करतीं श्रद्धेया बहिन जी।

पूर्व मंत्री व विधायक रामवीर उपाध्याय जी से मुलाकात करते मिशन के पदाधिकारी।

सादाबाद (हाथरस) में शोक सभा को सम्बोधित करते मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

आरसीए कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा द्वारा वात्सल्य ग्राम में आयोजित राष्ट्रीय योजना शिविर को सम्बोधित करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। दूसरे चित्र में महाविद्यालय की छात्राओं के साथ श्रद्धेया बहिन जी।

एनएसएस शिविर में छात्राओं को योगासन की पुस्तक भेंट करतीं मिशन अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी।

एनएसएस शिविर में छात्राओं को सम्बोधित करतीं मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। दूसरे चित्र में बहिन जी का शॉल ओढ़ाकर सम्मान करतीं महाविद्यालय की शिक्षिकाएं।

संस्कार जागृति मिशन के मेडीकल एडवाजर डा.सचिन चौधरी को सम्मानित कतरे स्ट्रीट स्कूल संचालक सतीश शर्मा जी, डा.कपिल प्रताप सिंह जी, विवेक प्रिय आर्य जी व अन्य। दूसरे चित्र में स्ट्रीट स्कूल के बच्चों के साथ मिशन के पदाधिकारी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

वेद मंदिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश जी महाराज व वैदिक विद्वान आचार्य महीपाल जी से मुलाकात करते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

दीदी मां साध्वी ऋतम्भरा जी आशीर्वाद प्राप्त करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

नवसंवत्सर 2077 के शुभांरभ व वैश्विक महामारी 'कोरोना' से मुक्ति प्राप्ति हेतु गिलोय व गुग्गल युक्त विशेष सामग्री से संस्कार जागृति मिशन के मर्गोर्रा, मथुरा व ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर वैदिक विधि विधान से अग्निहोत्र (यज्ञ) सम्पन्न किया गया।

कोरोना विजय प्राप्ति के लिए काम कर रहे साथियों का थाली बजाकर आभार व्यक्त करते आचार्य सत्यप्रिय आर्य व सरोज रानी आर्य।

होली के पावन पर्व पर गुलाल लगाकर गले मिलते मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व डा.कपिल प्रताप सिंह जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

06 फरवरी 2020 राजपथ मथुरा

बेटियां संस्कारित हो तो करेंगी देश का नाम रोशनः अर्चना प्रिय

आरसीए महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर छात्राओं को पढ़ाया संस्कारों का पाठ

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। आरसीए बालिका स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के बौद्धिक विकास सत्र में मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने छात्राओं से संवाद किया तथा योगासन विधि की पुस्तक का छात्राओं में वितरण किया। उन्होंने कहा कि बहिनों को शारीरिक रूप से सक्षम होना होगा तभी वह समाज में अपने खिलाफ हो रहे अत्याचारों से लड़ सकती हैं। अपने जीवन में वो संस्कार भी धारण करने होंगे जिन संस्कारों के द्वारा सीताए सावित्री, अपाला, घोषा जैसी देवियों को आजतक पहचाना जाता है।

उन्होंने कहा कि बेटियां यदि संस्कारित होंगी तो अपना ही नहीं बल्कि समाज व देश का नाम रोशन करेंगी। महाविद्यालय की शिक्षकाओं द्वारा शॉल ओढ़ाकर बहिन का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से युवा भारत के जिला प्रभारी तीर्थराज आर्य, महाविद्यालय की शिक्षिकाएं डॉ. सीमा शर्मा, डॉ. नीतू गोस्वामी सहित सैकड़ों छात्राएं उपस्थित रहीं।

अमर उजाला | आगरा | बृहस्पतिवार, 26 मार्च 2020

आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया

मथुरा। नव संवत्सर 2077 एवं आर्य समाज के 146वें स्थापना दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी एवं ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान हवन किया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि वैदिक साहित्य के अनुसार आज ही के दिन ईश्वर द्वारा पृथ्वी के तिब्बत-हिमालय क्षेत्र में युवावस्था में मनुष्यों की उत्पत्ति की थी। आज के ही दिन वेदों का ज्ञान ऋषियों को दिया गया था। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने आज से 146 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना की थी। सचिव विवेक प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य आदि मौजूद थे। संवाद

छोटी सी बात | मथुरा | 06 फरवरी 2020

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में छात्राओं को पढ़ाया संस्कारों का पाठ

बेटियां संस्कारित हो करेंगी देश का नाम रोशन

मथुरा (छोटी सी बात)। आरसीए बालिका स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा वात्सल्य ग्राम में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के बौद्धिक विकास सत्र में मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने छात्राओं से संवाद किया तथा योगासन विधि की पुस्तक का छात्राओं में वितरण किया। उन्होंने कहा कि बहिनों को शारीरिक रूप से सक्षम होना होगा, तभी वह समाज में अपने खिलाफ हो रहे अत्याचारों से लड़ सकती हैं। अपने जीवन में वो संस्कार भी धारण करने होंगे जिन संस्कारों के द्वारा सीता, सावित्री, अपाला, घोषा जैसी देवियों को आजतक पहचाना जाता है। उन्होंने कहा कि बेटियां यदि संस्कारित होंगी तो अपना ही नहीं बल्कि समाज व देश का नाम रोशन करेंगी। कार्यक्रम में प्रमुख रुप से युवा भारत के जिला प्रभारी तीर्थराज आर्य, महाविद्यालय की शिक्षिकाएं डॉ. सीमा शर्मा, डॉ.नीतू गोस्वामी सहित सैकड़ों छात्राएं उपस्थित रहीं।

आज | आगरा, 07 फरवरी 2020

बेटियां संस्कारित हो करेंगी देश का नाम रोशन : डॉ. अर्चना प्रिय

मथुरा। आरसीए बालिका स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा द्वारा वात्सल्य ग्राम, वन्दावन में आयोजित राष्टीय सेवा योजना शि. ... संस्कार जागृति ... त्राओं से संवाद ... ओं में वितरण ... रूप से सक्षम ... ख़लाफ हो रहे ... वो संस्कार भी ... सीता, सावित्री, ... चाना जाता है। ... अपना ही नहीं ... हाविद्यालय की ... सम्मान किया ... जिला प्रभारी ... डॉ. सीमा शर्मा, डा.नीतू गोस्वामी सहित सैकड़ों छात्राएं उपस्थित रहीं।

छोटी सी बात | मथुरा | 25 मार्च 2020

आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया

मथुरा (छोटी सी बात)। नवसंवत्सर 2077 व आर्य समाज के 146वें स्थापना दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर पदाधिकारियों द्वारा हवन किया गया। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि वैदिक साहित्य के अनुसार आज ही के दिन ईश्वर द्वारा पृथ्वी के तिब्बत-हिमालय क्षेत्र में युवावस्था में मनुष्यों की उत्पत्ति की गयी थी। आज के ही दिन वेदों का ज्ञान ऋषियों को दिया गया था। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा आज से 146 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना की गई थी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना है। सचिव विवेक प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान • गुरुवार • 26 मार्च 2020 •

आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया

मथुरा। नवसंवत्सर 2077 व आर्य समाज के 146वें स्थापना दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर हवन किया गया। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि वैदिक साहित्य के अनुसार आज ही के दिन वेदों का ज्ञान ऋषियों को दिया गया था। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा आज से 146 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना की गई थी।

राजपथ मथुरा | 25 मार्च 2020

संस्कार जागृति मिशन ने मनाया आर्य समाज का स्थापना दिवस

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। नवसंवत्सर 2077 व आर्य समाज के 146वें स्थापना दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर पदाधिकारियों द्वारा हवन किया गया। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि वैदिक साहित्य के अनुसार आज ही के दिन ईश्वर द्वारा पृथ्वी के तिब्बत-हिमालय क्षेत्र में युवावस्था में मनुष्यों की उत्पत्ति की गयी थी। आज के ही दिन वेदों का ज्ञान ऋषियों को दिया गया था। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा आज से 146 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना की गई थी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना है। सचिव विवेक प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत ।।

सभी देशवासियों को वैदिक नववर्ष तथा आर्य समाज के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

संस्कार जागृति मिशन

डा. अर्चना प्रिय आर्य
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

09719-910557 | DrArchanaPriyaJi / SanskarJagratiMission

कोराना वायरस : संस्कार जागृति मिशन का प्रस्तुतीकरण

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।